अरुणाचल प्रदेश में हिंदी के अभिभावक अध्यापक रमण शाण्डिल्य

राजीव रंजन प्रसाद

आजादी के बाद के दिन थे- 'साठ के दशक'। डॉ. रमण शाण्डिल्य अरुणाचल प्रदेश में अध्यापक की नियुक्ति पाए तो यहाँ की संपर्क भाषा असमीया थी। मातृभाषा बोलते यहाँ के आदिवासी पहाड़, नदी, घाटी एवं जंगल के बीच रह रहे थे। प्रकृति उनकी लोक-आस्था एवं लोक-विश्वास की वास्तविक सत्ता और सर्जक थी। अरुणाचलवासी बाहरी दुनिया से जुड़ने के लिए असमीया और अंग्रेजी को दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में बरत रहे थे। उन दिनों शिक्षा का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक नहीं था, लेकिन शैक्षणिक वातावरण की नई धारा और धुरी बननी शुरू हो गई थी। डॉ. रमण शाण्डिल्य हिंदी भाषा के प्रस्तावक और उन्नायक के रूप में यहाँ आए। वह यहाँ के लोगों से हिंदी में संवादी ही नहीं हुए, बल्कि लिखने-पढ़ने की परंपरा में नई पीढ़ी को जोड़ते हुए भी दिखाई दिए।

हिंदी भाषा एवं नागरी लिपि की समिधा में लवलीन हिंदी सेवी डॉ. शाण्डिल्य ने अपनी आँखे सदा के लिए मूँद ली थी। उन्होंने अंतिम सांस अपनी जन्मभूमि पर ली। मूलतः बिहार के रहने वाले रमण शाण्डिल्य पूर्वोत्तर के लिए सुपरिचित विद्वान रहे हैं। वह उत्तर-पूर्व की अटूट कड़ी रहे हैं। हिंदी भाषा के साधक डॉ. रमण शाण्डिल्य ने अपने तईं जो और जैसा भाषाई वातावरण सिरजा, वह मौजूदा अरुणाचल प्रदेश के लिए बड़ी उपलब्धि के रूप में दर्ज है। उनका संपादक व्यक्तित्व विराट था। वह भाषा के गहन एवं गंभीर पुरस्कर्ता रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश से प्रकाशित 'साङपो' और 'अरुण नागरी' पत्रिका उनके ही संपादन में निकली तथा अरुणाचल प्रदेश में हिंदी भाषा की नींव मजबूत की। वह राष्ट्रीय स्तर पर अरुणाचली भाषाओं और यहाँ के आदिवासी समुदाय के बारे में अलख जगाते रहे। अरुणाचली समाज-संस्कृति, मूल्य-दर्शन, भाषा-बोली, इतिहास व समकालीन स्थितियों के विषय में उन्होंने श्रमसाध्य ढंग से लगातार संवेदनशील होकर लिखने का महती कार्य किया। वर्ष 2019 में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के तत्त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. शाण्डिल्य को 'वाचस्पति सम्मान' से विभूषित किया गया, तो यह क्षण कभी न भूलने वाला था। इसी मौके पर रमण शाण्डिल्य की उपस्थिति में देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने 'अरुणाचल प्रदेश में हिंदी: अतीत से वर्तमान तक' विषयक व्याख्यान आयोजित हुआ जो अकादमिक अभिनंदन की तरह लगा। अरुणाचल प्रदेश की नई पीढ़ी रमण शाण्डिल्य को कम जानती है, लेकिन पुरानी पीढ़ी का उनसे जुड़ाव अद्भुत था। अरुणाचल प्रदेश के पहले हिंदी लेखक जुमसी सिराम उन्हें अपना गुरु मानते थे। जोराम आनिया ताना, जमुना बीनी, जोराम यालाम, तुम्बम रीबा की रचनाशील पीढ़ी उनके प्रति आज भी विशेष आदर का भाव रखती है।

अरुणाचल प्रदेश में प्रकृति की बहुलता मात्र नहीं है, बल्कि यहाँ इसके अनूठेपन में जो सादगी और सचाई है, रमण शाण्डिल्य उसे पूरी निष्ठा के साथ सार्वजनिन करते मालूम देते हैं। डॉ. शाण्डिल्य जनजातीय समाज में जिन मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं, वे रही हैं-भाषा-बोध, स्मृति, अनुभव, दृष्टिकोण, प्रेम, सेवा, त्याग,

बलिदान, सहिष्णुता, सह-अस्तित्व, सामूहिकता, भावनात्मक जुड़ाव, आत्मिक निष्ठा, लौकिक सत्य, आदिवासी चेतना, मानुष गंध, सहजानुभूति इत्यादि। अरुणाचल प्रदेश भारतीय संघ राज्य का एक ऐसा भूभाग है, जिसके सामाजिक-सांस्कृतिक लोकवृत्त को लेकर एक अजनबीयत आज भी पूरे देश में तारी है। लोग भूगोल में भटकने के कारण कई बार अरुणाचल प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में अंतर करना भूल जाते हैं। यह भारतीय-जन की जानकारी की सीमाएँ हैं, लेकिन जब आप जानने की कोशिश करें, तो यहाँ से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं के पुराने अंक बेहद मददगार साबित होते हैं। 'अरुण नागरी' इन्हीं में से एक प्रमुख पत्रिका है, जिसका संपादन रमण शाण्डिल्य के हाथों हुआ है। उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रहे बाबू वृंदावन दास 'ब्रज भारती' पत्रिका में रमण शाण्डिल्य के योगदान तथा सांगपो पत्रिका के महत्त्व का स्मरण करते दिखते हैं। इसी तरह संपूर्ण भारतीय लोक एवं वाङमय को केंद्रित कर वरिष्ठ पत्रकार मुनीन्द्र 'दक्षिण समाचार' नाम से साप्ताहिक पत्र निकालते थे। इस पत्रिका में 'अरुण नागरी' के आरंभिक अंकों की समीक्षा देखने को मिलती है। 'अरुण नागरी' को मिली राष्ट्रव्यापी लिखित प्रतिक्रियाएँ इस पत्रिका की पहुँच और उपलब्धि को स्वतः उजागर कर देती हैं। यह पत्रिका देश के विविध क्षेत्रों प्रयागराज, वाराणसी, पटना, उज्जैन, नई दिल्ली, जयपुर, हापुड़, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास, बालाघाट, मथुरा, सीतामढ़ी, देवघर, दुमका आदि में पढ़ी और सराही गई, जिनके प्रेषित पत्रों को डॉ. रमण ने आदरपूर्वक इस पत्रिका में छापा। देहरादून से मिली बाबूराम वर्मा की प्रतिक्रिया का कुछ अंश द्रष्टव्य है- "अरुण नागरी के सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने पर कोटिशः बधाइयाँ। पत्रिका छोटी ही सही, परंतु बहुत अच्छी तरह संपादित की हुई है और प्रस्तुतीकरण अज्ञेय की याद दिलाता है। 'आन्तर भारती' तो बहुत ही आकर्षक स्तंभ आपने रखा है। हिंदी और अरुणाचल भाषाओं को परस्पर निकट लाने का, समझने-समझाने का अन्यतम आयोजन है यह।"

अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल और साहित्यमना व्यक्तित्व के धनी श्री माता प्रसाद जी के शुभाकांक्षाओं ने उन्हें 'अरुण नागरी' पत्रिका निकालने के लिए न सिर्फ प्रेरित किया, बल्कि वे इस उद्देश्य में सफल भी हुए। एक चितेरा अध्यापक क्या कर सकता है, इसके मिसाल हैं- रमण शाण्डिल्य। रमण शाण्डिल्य बतौर शिक्षक अरुणाचल प्रदेश में पदस्थापित हुए। अरुणाचल प्रदेश के सुदूर इलाके पेसिङ परिक्षेत्र में रहवास के बावजूद उनकी सक्रियता और कार्यकलाप आज भी स्तुत्य है। रमण शाण्डिल्य ने इस प्रदेश के हित-लाभ में ज़मीनी काम किया, हिंदी भाषा की पौध को सींचा और लेखन के बिरवे को पकने का औजार उपलब्ध कराए। सांस्कृतिक-साहित्यिक परास को चौरस करते हुए इस प्रदेश में संपर्क भाषा हिंदी को हिंदी भाषा शिक्षण के दरवाजे तक पहुँचाने में सफल सिद्ध हुए। उनके प्रयास का ही प्रतिफल रहा कि अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित उनकी पुस्तकें पटना यूनिवर्सिटी और बिहार विश्वविद्यालय में बतौर पाठ्यक्रम लगीं। डॉ. रमण शाण्डिल्य की अब तक 125 संपादित और प्रकाशित रचनाएँ हैं, तो 24 पुस्तकें उनके सृजनधर्मिता के विपुल संसार को इंगित करती हैं। सीतामढ़ी से प्रकाशित 'नई सुबह' पत्रिका में रमण शाण्डिल्य जी पर केंद्रित अंक एक बड़ी उपलब्धि है, जिसे डॉ. दशरथ प्रजापति के संपादन में उचित आकार मिल सका। डॉ. रमण शाण्डिल्य के व्यक्तित्व और

रचना-कर्म को लेकर कालीचरण झा का साक्षात्कार भी पठनीय हैं, जो उनके योगदान का गरिमावंदन करता दिखाई देता है।

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी आचार्यत्व की भूमिका में रमण शाण्डिल्य के काम की जितनी भी सराहना की जाए, कम है। लेकिन इस सचाई से बहुत कम लोग भिज्ञ होंगे कि एक समय अरुणाचल प्रदेश में हिंदी में हस्ताक्षर के कारण उनकी तनख़्वाह रोक दी गई थी। तथापि आत्मसंघर्ष की चेतस गरिमा से संपन्न डॉ. रमण ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह भी तब जब पत्रकारिता में अरुणाचल प्रदेश की चर्चा बेमानी थी। इनर लाइन जैसे विशेष प्रावधान के कारण यहाँ के बारे में बहुत कुछ खुलकर कह-सुन सकना भी संभव नहीं था। इन सब चुनौतियों के बीच डॉ. रमण शाण्डिल्य ने अपने लेखन की धार को कुंद होने नहीं दिया, वे 'सरस्वती' पत्रिका में छद्म नाम से अरुणाचल प्रदेश को लेकर नियमित लेख लिखते रहे थे। उन्होंने लिखने-पढ़ने की ऐसी दुनिया गढ़ी, जिसकी पूर्व कोई शिरोरेखा नहीं मौजूद दिखाई देती है। अरुणाचल प्रदेश की पहली हिंदी पत्रिका 'सांगपो' थी। 1970 में निकली इस पत्रिका के सूत्रधार रहे-डॉ. रमण शाण्डिल्य। यह चक्रलिखित रूप में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका थी। इसके कुल 9 अंक प्रकाशित हुए। बाद के दिनों में 'पूर्व भारतीय जनपद' का भी संपादन किया था। 1995 में प्रकाशित 'अरुण नागरी' का प्रवेशांक रमण शाण्डिल्य की संपादन-दृष्टि की अविस्मरणीय मिसाल कही जाएगी, इन अंकों की राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच और स्वागत उल्लेखनीय है। यह पत्रिका वरिष्ठ पत्रकार विनोद रिंगानिया जी के सहयोग से गुवाहाटी में छपती थी।

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी भाषा के लिए जुझारु प्रयास और व्यक्तिगत संघर्ष करने वालों में रमण शाण्डिल्य की भूमिका प्रथमकर्ता की रही है। इस दिशा में उन्होंने देश के प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी से लेकर उनके सचिव कृष्ण चंद पंत से पत्राचार स्थापित किया था। उनका इस प्रदेश से टान इतना स्वाभाविक है कि वे अरुणाचल प्रदेश को 'उर्वर्शीयम' कहा करते थे जो नाम समाजवादी चिंतक राममनोहर लोहिया ने दिया था। यद्यपि वे 'उदयाद्रि' शब्द का व्यवहार भी इस प्रदेश के संबोधन में किया करते थे। रमण शाण्डिल्य मनीषी साहित्यकार वासुदेवशरण अग्रवाल को याद करते हैं, जिनके अनुसार कल्हण ने इस शब्द का प्रयोग इस पर्वतीय परिक्षेत्र के संदर्भ में बहुधा किया है।

रमण शाण्डिल्य मनीषी परंपरा के अनुभवी अध्येता ही नहीं, अपितु अरुणाचली जनसमाज के लिए प्रेरणास्रोत और हिंदी भाषा-शिक्षण के अगुवा हैं। रमण शाण्डिल्य द्वारा संपादित 'अरुण नागरी' के कुछ अंक मुझे मिले, तो लगा जैसे ऐसी महाकृतियाँ हाथ लगी हैं, जिसकी बदौलत अरुणाचल प्रदेश के बीते कल की यात्रा संभव हो सकेगी। रमण शाण्डिल्य जी के अवदान के बारे में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर श्याम शंकर सिंह अपनी किताब 'अरुणाचल प्रदेश में हिंदी: अध्ययन के नये आयाम' में लिखते हैं- उल्लेखनीय तौर पर 'अरुण नागरी' का प्रवेशांक (जनवरी-मार्च) 1995 ई. में प्रकाशित हुआ। इसका 7वाँ-8वाँ, 9वाँ-12वाँ और 13वाँ-14वाँ अंक संयुक्तांक रूप में प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के प्रधान संपादक धर्मराज सिंह थे। संपादन का दायित्व डॉ. रमण शाण्डिल्य पर था। दोनों का काम अवैतनिक था। पत्रिका के शुभकामना

संदेश में डॉ. नामवर सिंह ने लिखा था- "अरुणाचल प्रदेश में हिंदी में 'अरुण नागरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन ऐतिहासिक घटना है।''

आज की तारीख में 25 छोटे-बड़े जिलों वाला यह प्रदेश पूर्व में कैसा रहा होगा, इसके लिए 'अरुण नागरी' एक मुकम्मल दस्तावेज़ की तरह है। 'अरुण नागरी' के दूसरे अंक की संपादकीय में रमण शाण्डिल्य की आत्मस्वीकृति गौरतलब है- "20 जनवरी, 1972 को यह उत्तर-पूर्व सीमांत अंचल (नेफा) 'अरुणाचल प्रदेश' नाम से एक केंद्रशासित प्रदेश बनाया गया। बाद में 20 फरवरी, 1987 को यही केंद्रशासित राज्य पूर्ण राज्य में परिवर्तित हो गया। वर्तमान अरुणाचल प्रदेश में 13 जिले हैं। यथा: तावाङ, पश्चिमी कामेङ, पूर्वी कामेङ, पापुमपारे, निम्न सुबनसिरी, ऊपरी सुबनसिरी, पश्चिमी सियाङ, पूर्वी सियाङ, दिबाङ घाटी, लोहित, चाङलाङ और तिराप। इन जिलों के मुख्यालय क्रमशः इस प्रकार हैं- तावाङ, बोम-दि-ला, सेप्पा, दोईमुख, जीरो, दापोरिजो, आलोङ, पासीघाट, इन्कियोङ, अनिनि, तेजू, चाङलाङ, खोन्सा। इनमें कुछ जिलों के नाम तो इंग्लिश (अंग्रेजी) में हैं जिनका मैंने हिंदी अनुवाद कर दिया है।''

प्रश्न है, किसी भी स्थान की ऐतिहासिकता पर कैसे गुमान किया जाए। इसके लिए लोक-साहित्य अथवा लोक-मिथक की शरण स्वाभाविक है। अरुणाचल प्रदेश में तो मिथकीय नामों से सुमेलित कई ऐसे स्थान हैं, जो सहज ही आपको कुछ सोचने पर विवश कर देंगे। महामना रमण शाण्डिल्य अरुणाचली भूगोल के कुछ जगहों का जिक्र 'अरुण नागरी' के इसी अंक में करते हैं। जैसे-भीष्मकनगर, मालिनीथान, परशुराम कुण्ड, विजयनगर, जयरामपुर, महादेवपुर आदि। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ी बातों के संदर्भ में वह पूछने पर कुछ खास स्थानों को प्रकाश में लाते हैं। आलोंग से उत्तर-पश्चिम की दिशा में मणिगांग अंचल में स्थित एक पर्वत का जिक्र करते हुए वे कहते हैं कि यह पर्वत बिल्कुल शिवलिंग के आकार का है, जिसे स्थानीय तौर पर 'नामाङ शिबो' कहते हैं जो 'ओम नमो शिवाय' का अपभ्रंश रूप कहा जा सकता है। प्राक् साक्ष्य और लौकिक इतिहास इस बारे में अपनी वैज्ञानिक दृष्टि चाहे जो भी प्रकट करते हों, लेकिन डॉ. रमण शाण्डिल्य की पौराणिकता का बाना स्मरणीय अवश्य है।

ध्यातव्य है कि हिंदू मिथकों की यहाँ साम्यता मिलना इस बात की तसदीक है कि यहाँ के जनजातीय समाज की पुरखा-परंपरा हिंदू-आर्य-सनातन देशकाल की घोषणा से पूर्व की हैं। अर्थात् जिस धर्म को भारतीय धर्म का चोला-बाना पहनाने का राष्ट्रवादी उपक्रम जारी है, वह खुद आदिमजनों की इतिहास-संस्था से निकली और बाद के दिनों में विकसित हुई मालूम देती है। जबकि इस देश की असल सभ्यता की मुख्य धुरी आदिम समाज या कहें आदिवासी समाज ही है। देखें कि अरुणाचल प्रदेश के प्रकृतिजीवी आदिम जनजातियों ने मानव-मुक्ति केंद्रित आचरण तथा मूल्यविधान को सृष्टि के आरंभकाल से ही सर्वोपरि माना है। बौद्ध धर्म के फैलाव तथा इस जगह में रहवास के मिलते स्थापत्य इस बात की स्वमेव घोषणा करती हैं कि विश्वस्तरीय बौद्ध धर्म का अवगाहन करने वाला जनसमाज अरुणाचल प्रदेश में भी रहा है। इसके लिए बौद्ध मठ, भोटी भाषा के साहित्य तथा लामाओं की अपनी ज्ञानशाखाएँ मददगार साबित हो सकती हैं। यद्यपि हिंदी साहित्य के अध्येताओं से यह सब मालूम होने की अपेक्षा स्वाभाविक है, जिसका उल्लेख रामविलास शर्मा 'भारतीय इतिहास के साहित्य

की समस्याएँ' किताब में यथेष्ट ढंग से करते हैं। वह एक जगह लिखते हैं कि- "विष्णु पुराण के द्वितीय अंश के तीसरे अध्याय में भारतवर्ष का वर्णन है। जो देश समुद्र के उत्तर में है और हिमालय के दक्षिण में है, वह भारतवर्ष है, उसकी संतति का नाम भारती है। इस देश के पूर्वी भाग में किरात है, पश्चिमी भाग में यवन है। इसमें शतद्रु, चन्द्रभागा, गोदावरी, ताम्रपर्णी आदि नदियाँ बहती हैं। इस देश में कुरु, पांचाल, कोसल, कामरूप, पुण्ड्र, कलिंग, मगध, सौराष्ट्र आदि जन रहते हैं। ये सब लोग मिलकर रहते हैं और इस देश की नदियों का जल पीते हैं: आसा पिवन्ति सलिलं वसन्ति सहिताः सदा'। कवि के अनुसार ये सब लोग सहित भाव से निवास करते हैं अर्थात् मिलकर रहते हैं। यही राष्ट्रीय एकता का समर्थ आधार है।''

देखिए विडंबना कि अपनी आयातित धर्म-परंपरा का प्रचार करते आते लोग यहाँ के लोगों को जोड़ना बहुत चाहते हैं, लेकिन जुड़ना बिल्कुल नहीं। विडंबना यह भी कि यहाँ आए और सुविधानुसार भाग गए लोग अपनी हेकड़ी और दंभ में इस प्रदेश में अपने किए का कुहराम बहुत मचाते हैं; लेकिन उनकी निष्ठा, सेवाभाव और समर्पण डॉ. रमण शाण्डिल्य की तरह नहीं है जो ताउम्र यहीं का हो कर रह गए। अपनी शिष्य परंपरा का कोई दावा न करने वाले डॉ. रमण शाण्डिल्य का खुला व्यक्तित्व और खुला व्यवहार आपको अपनी मोहपाश में खींच लेता है। ऐसे मनीषी आचार्य के संपर्क, संवाद और सान्निध्य में बहुत कुछ सीखा-जाना जा सकता है, जो इस राज्य में रहवास करते हुए उन्होंने हासिल किया हुआ है। डॉ. रमण शाण्डिल्य राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में अरुणाचल प्रदेश के प्रतिनिधि चेहरे के तौर पर कई दशकों तक लेखन करते रहे हैं। वे कई बार छद्म नाम 'नीलकंठ', 'पूर्वमित्र', जानकी रमण यायावर' से लिखा करते थे, जो उन्हें अरुणाचल प्रदेश की स्थानीय समस्याओं, संदर्भों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में उजागर करना जरूरी लगता था। उस समय की राष्ट्रीय तेवर और कलेवर की प्रमुख पत्रिकाएँ थीं -'कल्पना', 'जन', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'धर्मयुग', 'लोकराज' आदि। इस बारे में डॉ. रमण शाण्डिल्य 'कल्पना' पत्रिका के संपादन मण्डल से जुड़े जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी का नाम आप आदर से लेते हैं, जिनका आपके उत्तर-पूर्व के लेखन से गहरा लगाव था। जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी जी ने उन्हीं दिनों टीकमगढ़ से बनारसीदास चतुर्वेदी के साथ मिलकर 'मधुकर' पत्रिका निकाली। बाद के दिनों में यही चतुर्वेदी जी इंदिरा गाँधी से निकटता के कारण उनके साथ पत्रकार-मण्डली में विदेशों की यात्रा में कई बार गए। डॉ. रमण जी ऐसे महानुभावों के संग-साथ मिलकर अरुणाचल प्रदेश में हिंदी भाषा का अलख जगा रहे थे। रमण शाण्डिल्य अरुणाचली जनभाषाओं को हिंदी में पूरे सामाजिक-सांस्कृतिक गरिमा और बोध के साथ प्रकाश में लाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ दिखाई पड़ते हैं। आज उनके योगदान को भाषा के पैरे में बाँध सकना मुश्किल है, तथापि उनकी शिष्य परंपरा में शामिल जुमसी सिराम, जोराम आनिया ताना, जमुना बीनी, तुम्बम रीबा का नाम उल्लेखनीय है।

अतः ऐसे स्वनामधन्य महर्षि आचार्य जिन्होंने अरुणाचल प्रदेश की जनजातीय ज्ञान-संपदा, कला-कौशल, भाषा-समाज, संस्कृति-साहित्य आदि को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित-प्रसारित किया है, वह इस प्रदेश की हिंदी पीढ़ी के लिए शिरोधार्य है। 'अरुण नागरी' पत्रिका के अलावे उनके लेखन का जो फलक या वितान रहा है, वह काफी विस्तृत है। आने वाली पीढ़ी को उसमें काफी कुछ जोड़ना है, उसे आगे बढ़ाना है। आत्मिक

निष्ठा और पूर्ण समर्पण के साथ डॉ. रमण शाण्डिल्य ने आदिवासी चेतना की जन-संस्कृति को मुखरित किया है। यहाँ कि जन-संवेदना को हिंदी भाषा में अभिव्यंजित कर अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया है। यह कार्य दुष्कर और कंटिकापूर्ण होने के बावजूद उन्होंने अपने को अरुणाचल प्रदेश की सेवापूर्ति में खपा दिया, इस भूमिका की याद अरुणाचलवासियों के दिलोदिमाग में सदैव बनी रहेगी और बनी रहनी भी चाहिए।

*(**लेखकीय परिचय**: डॉ. राजीव रंजन प्रसाद वर्तमान में राजीव गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं तथा भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा अनुदानित 'अरुणाचली लोक-साहित्य और मीडिया: अंतःसंबंध एवं अंतःक्रिया' शीर्षक शोध-परियोजना कार्य पूर्ण कर चुके हैं। संपर्क : rajeev.prasad@rgu.ac.in, मोबा. 6909115086)*